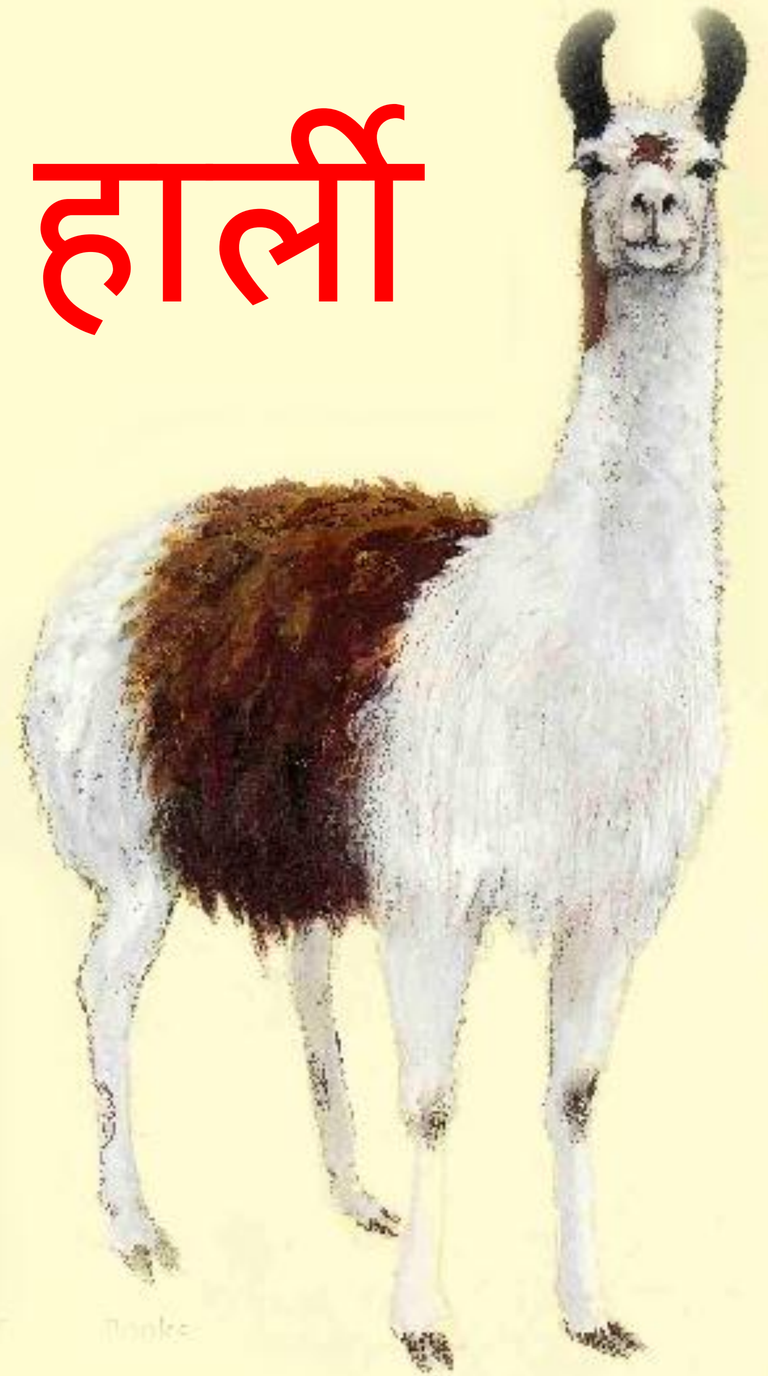
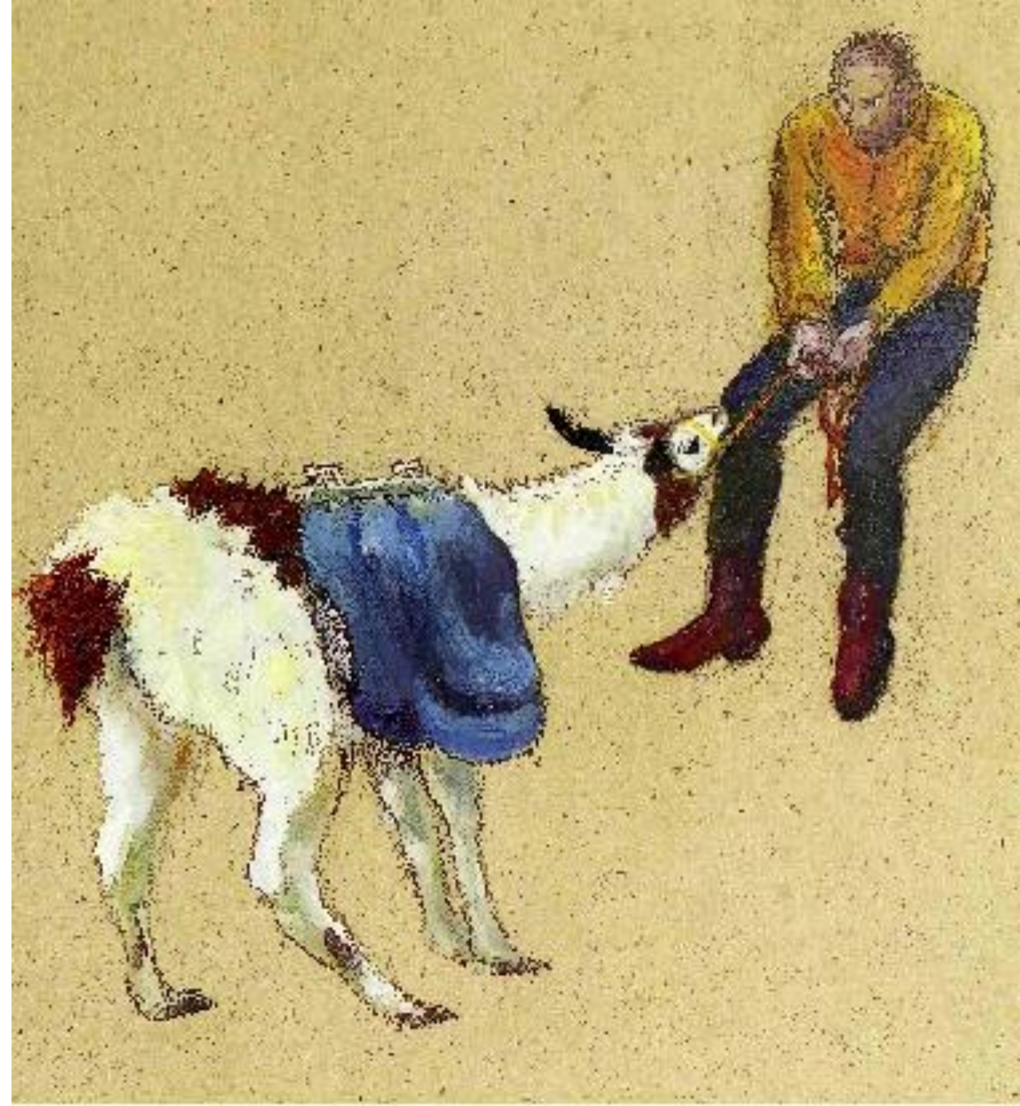
हार्ली




हार्ली

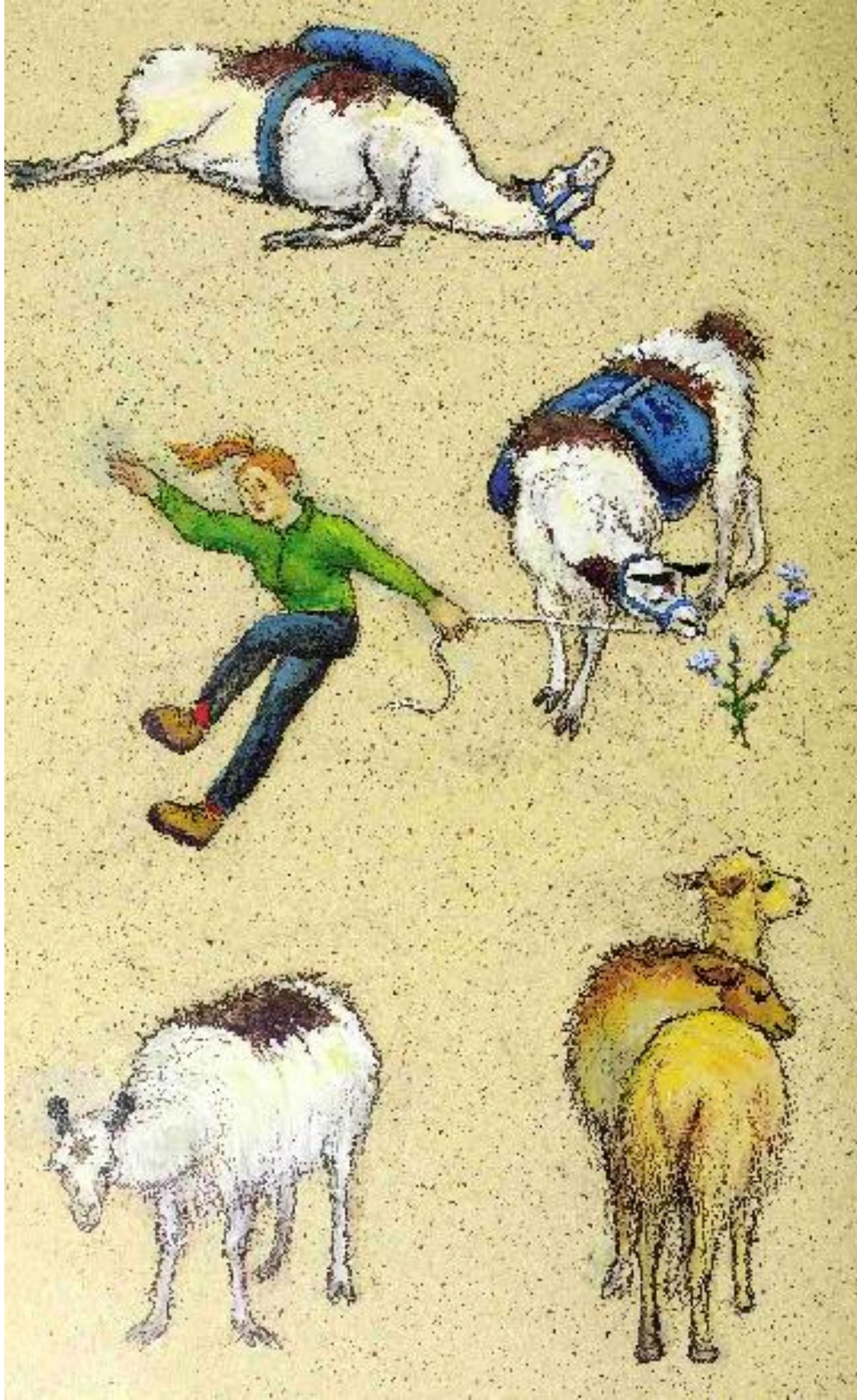


हार्लो एक युवा यामा है.

वह एक रैंच में रहता है.

वह बोझा ढोने का काम सीख रहा है

और उसके लिए यह कठिन समय है.



उसे लगाम पहननी पड़ती है.
वह लगाम पहनता है.
उसे अच्छा नहीं लगता है.
उसे बोझा उठाना पड़ता है.
वह बोझा उठता है.
उसे अच्छा नहीं लगता है.
रास्ते पर उसे लोगों के पीछे
चलना पड़ता है.
लेकिन वह अपनी राह चलना चाहता है.
उसे अन्य यामाओं के साथ मिलजुल कर
रहना पड़ता है.
वह ऐसा नहीं करता.
जब दूसरे यामा उसके निकट आते हैं
तो वह चीखता है.
वह उन्हें धक्का मारता है.
वह उन्हें ठोकर मारता है.
वह उन पर थूकता है!

आज एक यामा उसके बहुत निकट आ जाता है.

हार्ली अपने कान पीछे कर लेता है.

हार्ली अपनी गर्दन बहुत पीछे खींचता है.

फिर हार्ली थूकता है.

अपने पेट से निकाल कर हरे रंग की थूक

ज़ोर से थूकता है.

थूक उस यामा पर नहीं गिरती.

थूक उसके उस्ताद पर जा गिरती है.



स्पलैट!

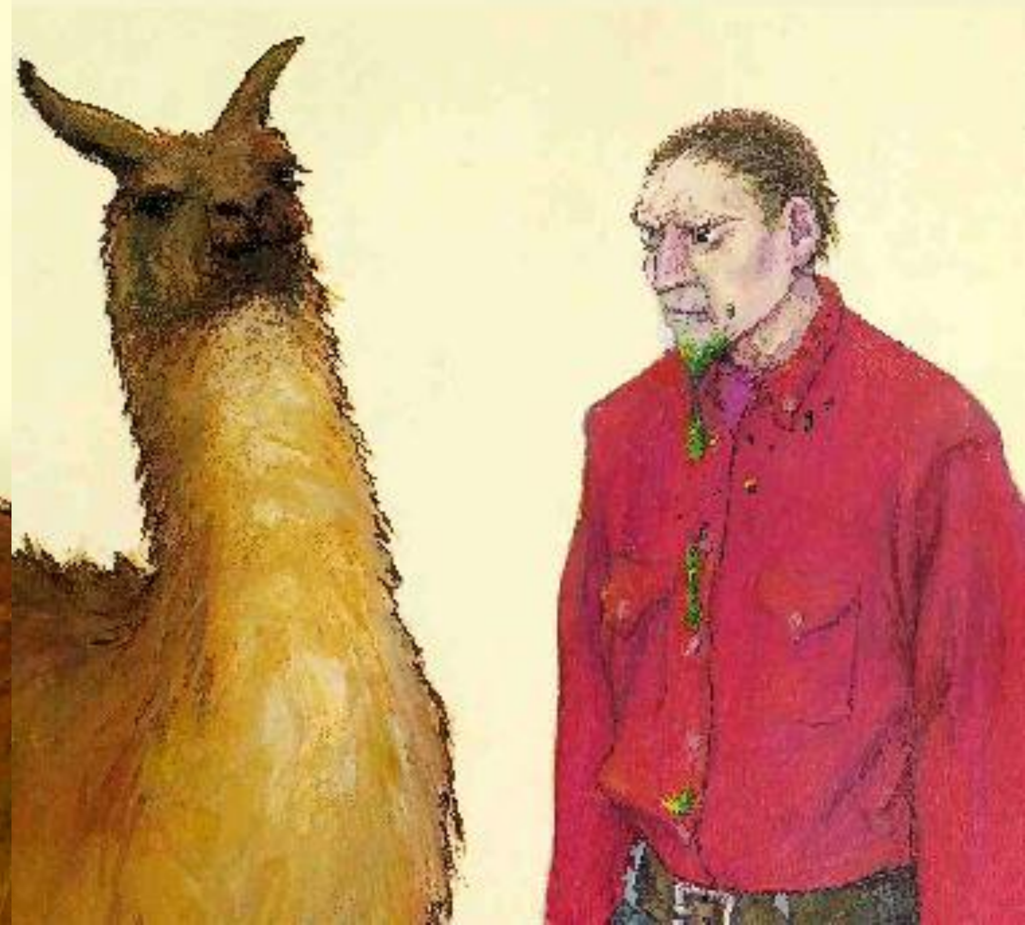
थूक उस्ताद की ठोड़ी पर गिरती है.

उसकी कमीज़ पर टपकती है.

थूक की दुर्गंध भयंकर है.

हार्ली मुसीबत में फंस गया है.

अब हार्ली का क्या होगा?







यामा-रैंच से बहुत दूर एक
बड़ा मैदान है.
खरगोश और विशाल चूहे वहाँ रहते हैं.
कछुए, झींगुर और नन्हे चूहे भी रहते हैं.
मैदान के एक ओर एक बाड़ा लगा हुआ है.
बाड़े के अदंर भेड़ें रहती हैं.

भेड़ें एक गड़ेरिन की हैं.
हर दिन वह उनकी देखभाल करने आती है.
हर दिन वह अपने कुत्ते साथ लाती है.
वह कुत्तों को भेड़ों को एक जगह
इकट्ठा करना सीखा रही है.



निकट ही जंगल हैं.

कयोटी उस जंगल में रहते हैं.

अब शीत ऋतु है.

खरगोश बहुत थोड़े हैं.

कयोटी भूखे हैं.

भेड़ें मोटी और रोमिल हैं.

कयोटियों के मुँह में पानी आ जाता है.

बाड़ पार करना उन्हें आसान लगता है.



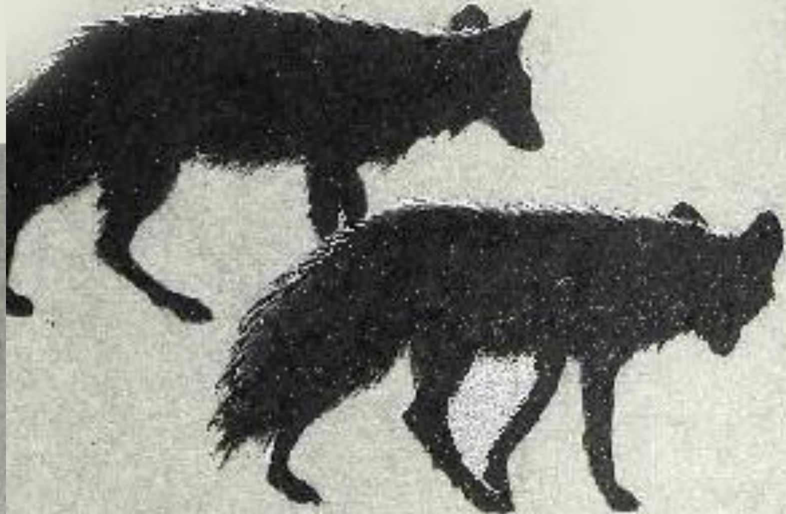
कयोटी बहादुर हैं.

रात हो जाती है.

पूर्णिमा की रात है.

कयोटी शिकार करने निकलते हैं.

वह भेड़ों का शिकार करने निकलते हैं.





सुबह गड़ेरिन आती है.
वह घास और अनाज लाती है.
वह पानी लाती है.
वह भेड़ों की गिनती करती है.
एक भेड़ कम है.
उसे ढूँढने के लिए वह मैदान का चक्कर लगाती है.
कुछ ऊन उसे दिखाई देती है.
बाद में कुछ हड्डियाँ उसे मिलती हैं.
बस इतना ही.
जो भेड़ गायब है उसके बस
इतने ही अवशेष मिलते हैं.
कयोटी बहुत भूखे थे.

गड़ेरिन कयोटियों को जानती है.
वह जानती है कि वह वापस आयेंगे.
वह बाड़े को ऊँचा कर देती है.
कयोटी दुबारा आते हैं.
वह ऊँची बाड़ को कूद कर पार कर जाते हैं.
इस बार वह एक बड़ी भेड़ ले जाते हैं.
उस भेड़ को पूरी तरह खा जाते हैं.



गड़ेरिन नहीं जानती कि वह क्या कर सकती है.

वह भेड़ों को सुरक्षित नहीं रख सकती.

वह लोगों से मदद लेती है.

“बंदूक खरीद लो.”

“ज़हर डाल दो.”

“पहरेदारी के लिए एक यामा ले आओ.”

“यामा नहीं लाओ.”



“कयोटियों को पकड़ने के लिए फंदा लगाओ.”

“बाड़े को और ऊँचा कर लो.”

गड़ेरिन सबकी बात सुनती है.

वह और भेड़ें खोना नहीं चाहती है.

वह कयोटियों को मारना नहीं चाहती है.

उसे शीघ्र कुछ करना होगा.

वह सोचती है कि एक यामा भेड़ों की रक्षा कर पायेगा.

वह सोचती है कि यामा के साथ मज़ा आयेगा.

वह इस विचार को आज़माने का निर्णय लेती है.



गड़ेरिन एक यामा-रैंच को फोन करती है.
वह रैंच के स्वामी से कहती है कि
पहरेदारी के लिए उसे एक यामा चाहिए.

स्वामी को लगता है कि
वह सहायता कर सकती है.
उसके पास बेचने के लिए कई यामा हैं.
गड़ेरिन रैंच जाती है.
वह यामाओं को देखती है.
कुछ बहुत छोटे हैं.
कुछ लोगों को पसंद नहीं करते हैं.
कुछ सिर्फ दूसरे यामाओं की संगत में प्रसन्न हैं.
कई बोझा उठाने के लिए प्रशिक्षित
किए गए हैं.
लेकिन उन में ऐसा
कोई नहीं है
जैसा गड़ेरिन चाहती है.
हार्ली अंतिम यामा है.
गड़ेरिन को हार्ली अच्छा लगता है.

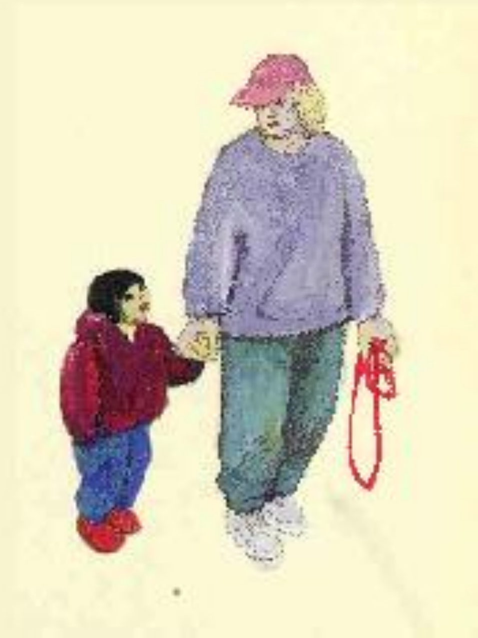


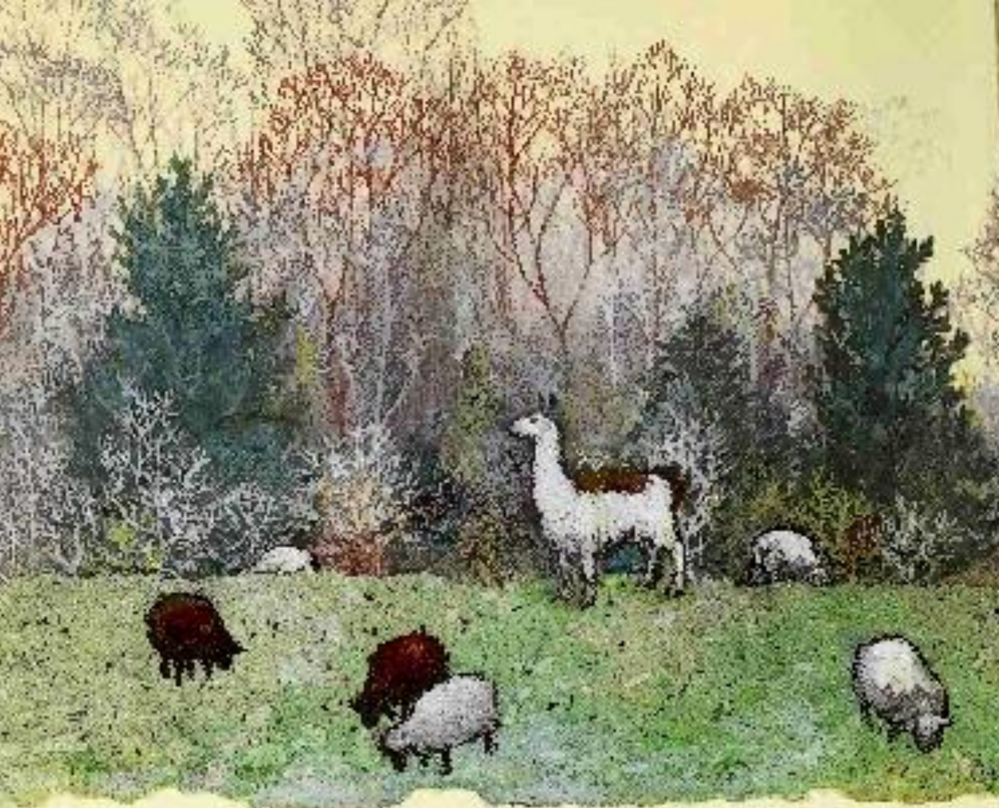
वह सोचती है कि शायद
उसका मैदान उसे पसंद आए.
वह सोचती है कि शायद
उसकी भेड़ें उसे अच्छी लगें.
वह हार्ली को आज़मायेगी.

हार्ली ट्रक के पिछले भाग में है.
लंबे समय से वह वहाँ है.
गड़ेरिन ट्रक का पिछला
दरवाज़ा खोलती है.
वह लगाम पकड़ती है.
हार्ली बाहर आता है.
वह अपनी अगली टाँगें फैलाता है.
वह अपनी पिछली टाँगें फैलाता है.
इधर-उधर चलना उसे अच्छा लगता है.



गड़ेरिन बाड़ का दरवाज़ा खोलती है.
हार्ली भेड़ों को देखता है.
भाग कर वह दरवाज़े से अंदर आता है.
वह भेड़ों की ओर भागता है.
मेढ़ा हार्ली पर हमला करता है.
भेड़ें इधर-उधर भागने लगती हैं.
सब व्याकुल हैं.
गड़ेरिन चिंतित है.
उसे डर है कि उसने भूल कर दी है.
लेकिन अब देर हो चुकी है.
उसे प्रतीक्षा करनी होगी.





सुबह गड़ेरिन वापस आती है.
सब कुछ व्यवस्थित हो गया है.
हार्ली भेड़ों की पहरेदारी कर रहा है.
अब वह उसकी भेड़ें हैं.
यह उसका मैदान है.
क्या हुआ था?
सिर्फ हार्ली और भेड़ें जानती हैं.

हर सुबह गड़ेरिन हार्ली के लिए
उसके हिस्से का अनाज लाती है.
उसे वह छोटे शैड के
ऊपर रख देती है.
हार्ली अनाज तक पहुँच जाता है
लेकिन भेड़ें नहीं पहुँच पातीं.
इस तरह गड़ेरिन जतलाती है कि
उसके लिए हार्ली विशेष है.
हार्ली को यह अच्छा लगता है.
वह हर दिन गड़ेरिन की प्रतीक्षा करता है.
वह उसे अपने निकट आने देता है.
कभी-कभी वह उसके हाथ
से भी खाता है.





शीत ऋतु के अंतिम दिनों
में मेमने पैदा होते हैं.
हवा शोर मचाती है.
बर्फ गिरती है.
बहुत ठंड है.

गड़ेरिन भेड़ों के शैड में
साफ घास बिछा देती है.
रोशनी के लिए वहाँ एक
लैंप लटका देती है.
वह माँ-भेड़ों को अंदर लाती है.
शैड में मेमने जन्म लेते हैं.
भीतर ठंड और हवा से वह सुरक्षित हैं.



हार्ली मेमनों के साथ रहना चाहता है.
वह माँ-भेड़ों के निकट रहना चाहता है.
हार्ली भेड़ों के झुंड के पास भी रहना चाहता है.
वह उन्हें अकेला नहीं छोड़ना चाहता है.
वह आगे-पीछे दौड़ता है.
अभी वह शैड के अंदर है.
अभी वह मैदान में है.
वह भिनभिनाता है.
वह निर्णय नहीं ले पाता.
गड़ेरिन उसकी सहायता करती है.
वह बीच का दरवाज़ा बंद कर देती है.

हार्ली मेमनों को प्यार करता है.
हर मेमने को वह अपनी नाक से छूता है.
वह निश्चय कर लेना चाहता है कि कोई
गायब तो नहीं.
वसंत आने तक मेमने तेज़ी
से बड़े होने लगते हैं.
वह सारा दिन भागते-कूदते हैं.
एक मेमना माँ की पीठ पर चढ़ जाता है.
दूसरे उसे नीचे गिराने का प्रयास करते हैं.
मातायें बिलकुल परवाह नहीं करतीं हैं.
वह बैठी-बैठी जुगाली करती रहती हैं.



मेमने हार्ली के साथ खेलने की कोशिश
करते हैं.
हार्ली को बुरा नहीं लगता.
वह अपने कान पीछे कर लेता है.
वह खड़ा हो जाता है.
मेमने नीचे गिर जाते हैं.
हार्ली लेटने के लिए कहीं और
चला जाता है.
मेमने फिर कोशिश करते हैं.
मेमने हार्ली को तंग करते हैं.





मेढ़ा मैदान में सबसे बड़ा है.

वह हर एक को धकेलता है.
वह हर एक को सिर
से टक्कर मारता है.
भेड़ें उसे पसंद नहीं करती हैं.
वह उसकी ओर पीठ कर लेती हैं.
मेमने उसे पसंद नहीं करते हैं.
वह उससे दूर ही रहते हैं.
कुत्ते उसे पसंद नहीं करते हैं.
वह उसको पाँव पर काटते हैं.
गड़ेरिन उसके गले में एक घंटी
लटका देती है.
अब वह चुपके से उसके पास
नहीं आ सकता.
गड़ेरिन को भेड़ों और मेमनों
पर दया आती है.
वह अकसर उन्हें अलग
जगह खाना देती है.
वह मेढ़े को हार्ली के पास छोड़ देती है.
उसे लगता है कि हार्ली
अपना ध्यान रख सकता है.



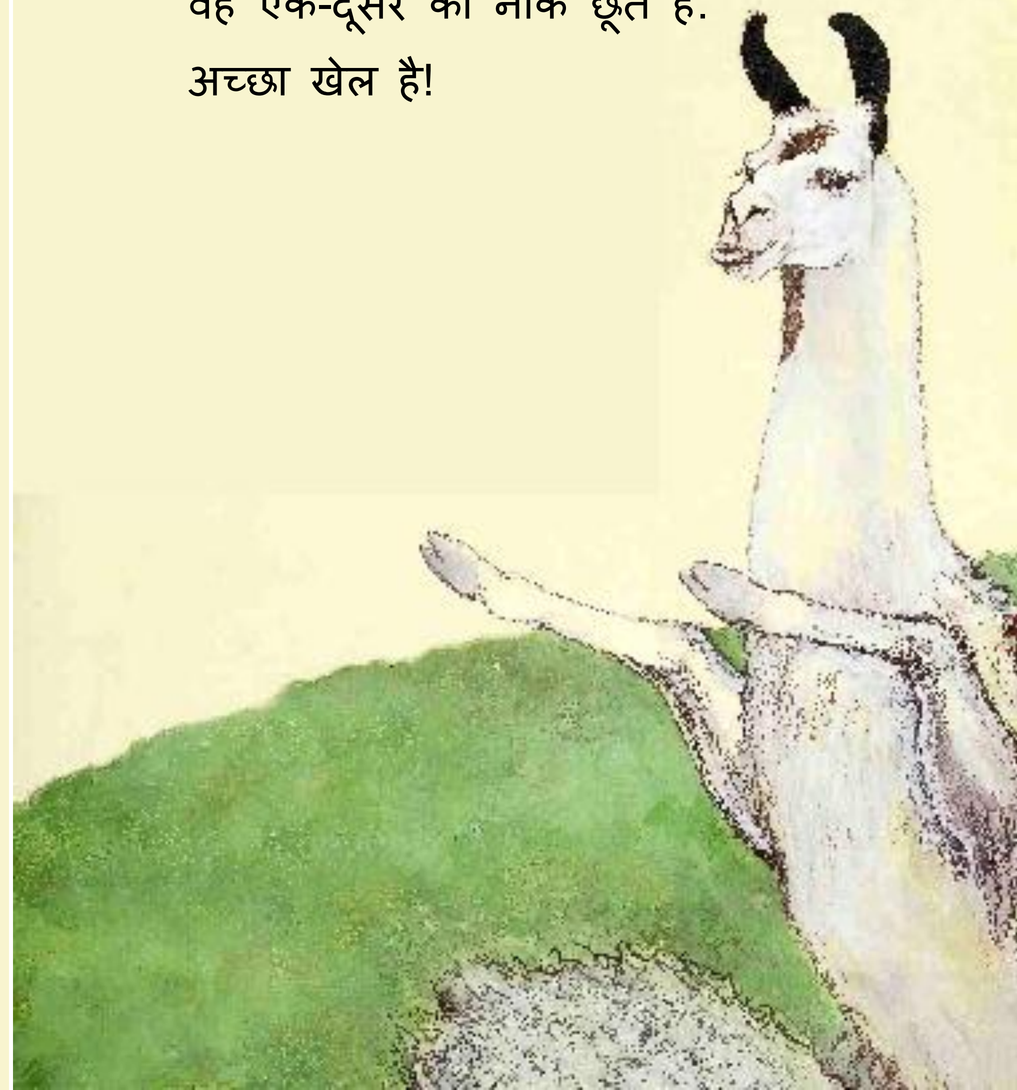
एक दिन भेड़ों को देखने के लिए
गड़ेरिन बाड़े में आती है.
भेड़ें वहाँ हैं, घास खा रही हैं.
हार्ली वहाँ है, वह लेटा हुआ है.
हार्ली के आगे मेढ़ा है.
वह हार्ली के बहुत निकट खड़ा है.

वह हार्ली पर झुकता है.
हार्ली अपना सिर घुमाता है.
अपनी नाक से वह मेढ़े की नाक छूता है.
मेढ़ा अपना सिर हार्ली की गर्दन पर
रगड़ता है.
गड़ेरिन देखती है.



मेढ़ा पीछे हटता है.
वह अपनी सिर इधर-उधर हिलाता है.
वह स्थिर खड़ा हो जाता है.
फिर वह हार्ली पर हमला करता है.
हार्ली उसे आता हुआ देखता है.
मेढ़ा निकट, और निकट आता है.
हार्ली खड़ा हो जाता है.
वह सही समय पर खड़ा होता है.

उसकी अगली टाँगे ऊपर उठीं हैं.
मेढ़ा सीधा उसके नीचे से
निकल जाता है.
हार्ली फिर लेट जाता है.
मेढ़ा वापस आता है.
वह हार्ली के निकट खड़ा हो जाता है.
वह एक-दूसरे की नाक छूते हैं.
अच्छा खेल है!



अँधेरी रात है.
तीन कयोटी शिकार करने निकलते हैं
“यिप, यिप, यिप!”
वह चिल्लाते हैं.



भेड़ें छटपटा रही हैं.
वह एक जगह इकट्ठी हो जाती हैं.
कयोटी निकट ही लगते हैं.
वह बहुत निकट हैं.
वह बाड़ के साथ-साथ दौड़ रहे हैं.
वह बाड़ के ऊपर कूदने के लिए कोई
सही जगह ढूँढ रहे हैं.
वह जगह ढूँढ लेते हैं.

अचानक बाड़ के अंदर शोर
सुनाई देता है.
हार्ली चीख रहा है.
हार्ली दौड़ रहा है.
उसकी टाँगे हर दिशा में घूमती हैं
उसकी गर्दन आगे-पीछे झूलती है.



हार्ली भेड़ों से दूर, बाड़ की ओर भागता है.
कयोटी वहाँ नहीं हैं.

वह भाग जाते हैं.
आज रात वह कहीं और शिकार करेंगे.

“बा....बा....बा....!”

घास के कोठार में बहुत शोर है.

सारा झुंड वहाँ कोठार में है.

हार्ली भी वहाँ है.

आज ऊन काटने का दिन है.

आज भेड़ों की ऊन काटी जाती है.

ऊन कतरने वाली औरत

एक भेड़ को पकड़ती है.

वह भेड़ को पीठ पर लेटा देती है.

भेड़ शांत हो जाती है.

वह कैंची से ऊन काटती है.

सारी ऊन एक साथ उतर जाती है.

गड़ेरिन ऊन को एक

थैले में रख लेती है.

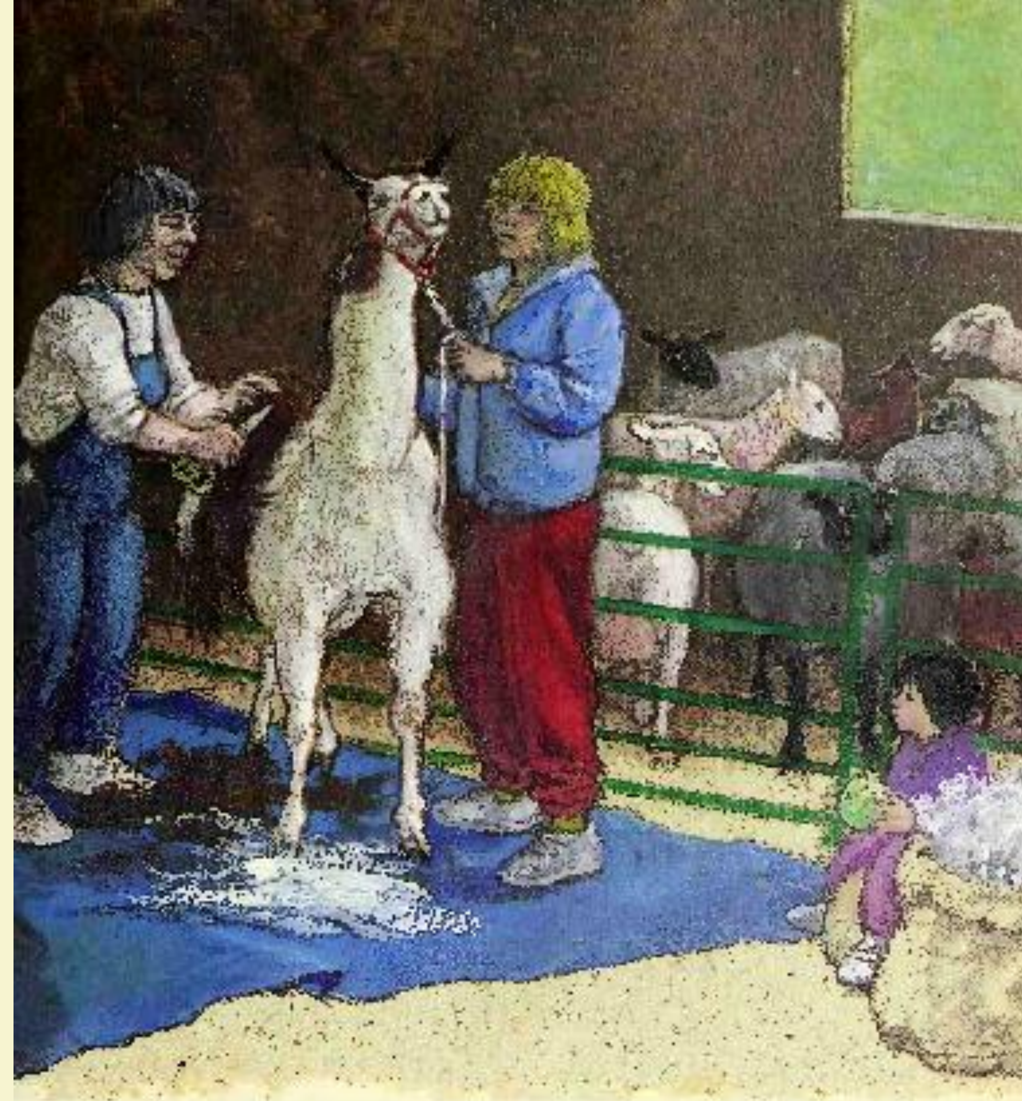
“अगली भेड़!” ऊन

काटने वाली पुकारती है.

हार्ली सबसे अंत में आता है.

आजतक उसकी ऊन नहीं काटी गई.

उसे कैंची अच्छी नहीं लगती है.



वह गड़ेरिन को उसे पकड़ने देता है.

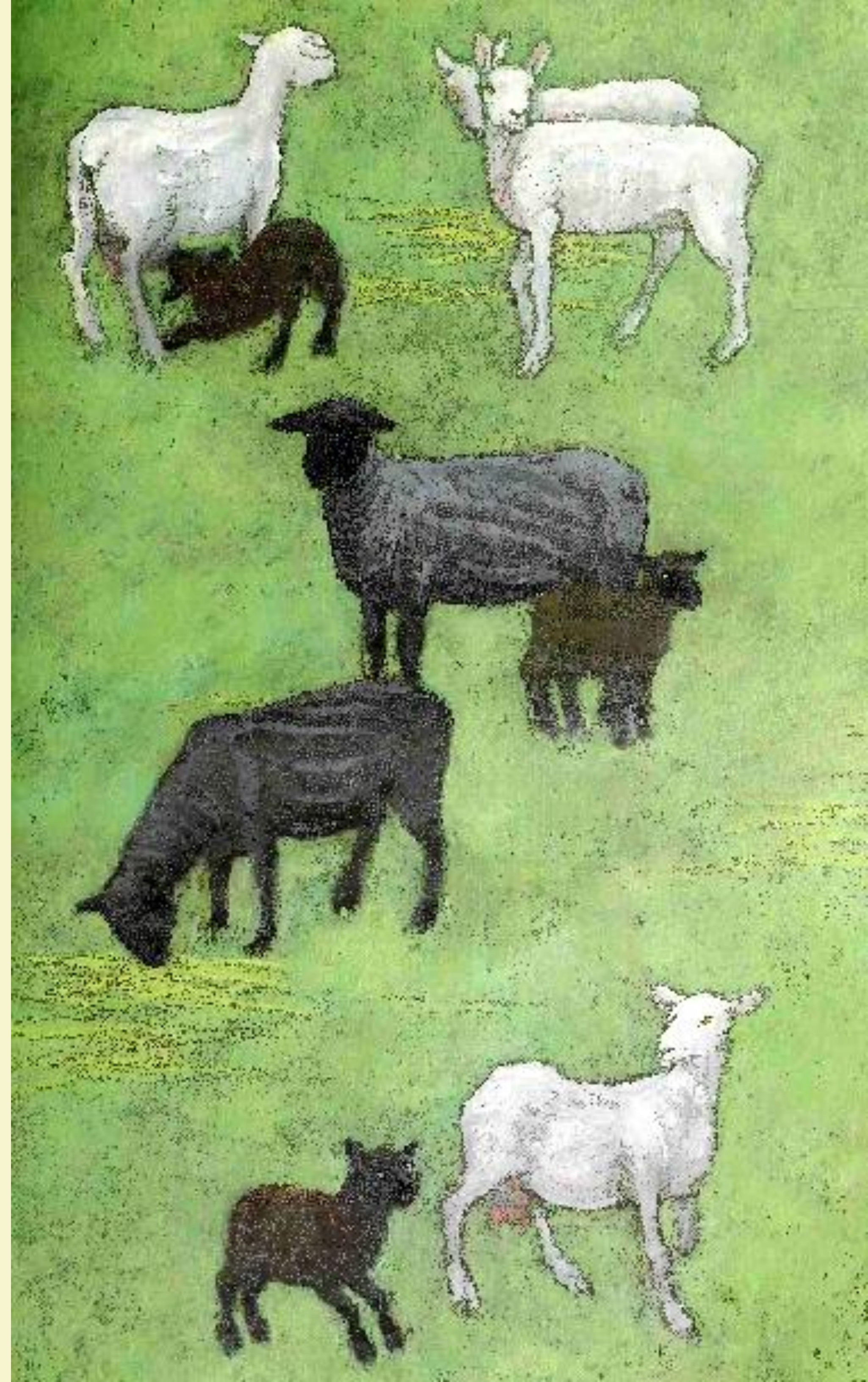
ऊन काटने वाली को

वह ऊन काटने देता है.

उसकी ऊन मुलायम और घनी है.

उसकी ऊन बहुत अधिक है.

गाँव के मेले में गड़ेरिन भेड़ों की
सबसे बढ़िया ऊन ले जाती है.
इस बार वह यामा की ऊन भी
प्रतियोगिता के लिए ले जायेगी.
जब सारी ऊन कट जाती है तो
थैलों में ढेर सारी ऊन
इकट्ठी हो जाती है.
भेड़ें अब छोटी दिखाई पड़ती हैं.
उनकी टाँगें लंबी लगती हैं.
अपनी ऊन के बिना
उन्हें अटपटा लगता है.
यह एक बड़ा परिवर्तन है.
वह थोड़ा भयभीत हैं.
बाद में उन्हें अच्छा लगोगा.
सारी गर्मियों में उन्हें गर्मी न लगेगी
सर्दी आने से पहले उनकी ऊन
फिर से बड़ी हो जायोगी.



गड़ेरिन के पास एक नया कुत्ता है.
उसका नाम है जैट.
जैट गायों को इकट्ठा करना जानता है.
वह गायों से डरता है.
जैट भेड़ों को इकट्ठा करना जानता है.
वह भेड़ों से डरता नहीं है.
वह अपना काम अच्छे से करता है.
गड़ेरिन जैट को भेड़ों के बाड़े
में भेजती है.
हार्ली उसे आता
हुआ देखता है.
हार्ली जैट को नहीं
जानता है.
उसे एक अपरिचित
कुत्ता दिखाई देता है.
वह उसे भेड़ों की ओर
जाते देखता है.
हार्ली हमला करता है.
वह जैट का पीछा करता है.
जैट भाग कर गड़ेरिन के पास आता है.



कुत्ते ने पहले कभी यामा देखा न था.
अब वह गायों और यामा से डरता है.



गड़ेरिन भेड़ों को बाहर भेजती है.
वह हार्ली को बाड़े के
अंदर बंद कर देती है.
वह जैट को बताती है कि
भेड़ों को कहाँ ले जाना है.
हार्ली देखता है.
वह भिनभिनाता है.
उसे लगता है कि जैट
के साथ भेड़ें सुरक्षित नहीं हैं.
कुछ समय बाद वह
जैट के साथ अभ्यस्त हो जायेगा.







एक दिन गड़ेरिन हार्ली के लिए
विशेष खाना ले कर आती है.
एक कटोरे में अनाज और सेब के
छिलके वह लाई है.
वह कटोरे को बाड़ के ऊपर ले आती है.
हार्ली दौड़ कर आता है.
वह खाना निगलने लगता है.
मेढ़े को भी कुछ खाना चाहिए.

वह कटोरे को नीचे से अपनी नाक
से टटोलता है.
हार्ली जल्दी-जल्दी खाने लगता है.
मेढ़ा बाड़ तक घुस आता है.
हार्ली गड़गड़ाहट सा आवाज़
निकाल कर उसे डराता है.
आखिरकार, मेढ़ा पीछे हट जाता है.
हार्ली जितना जल्दी खा सकता है,
खाता है.





मेढ़ा दौड़ता हुआ आता है और
हार्ली को सिर मारता है.
हार्ली तुरंत घूम जाता है.
वह ज़ोर से मेढ़े पर थूकता है.
उसका मुँह अनाज से भरा है.
मेढ़े पर अनाज की बौछार गिरती है.

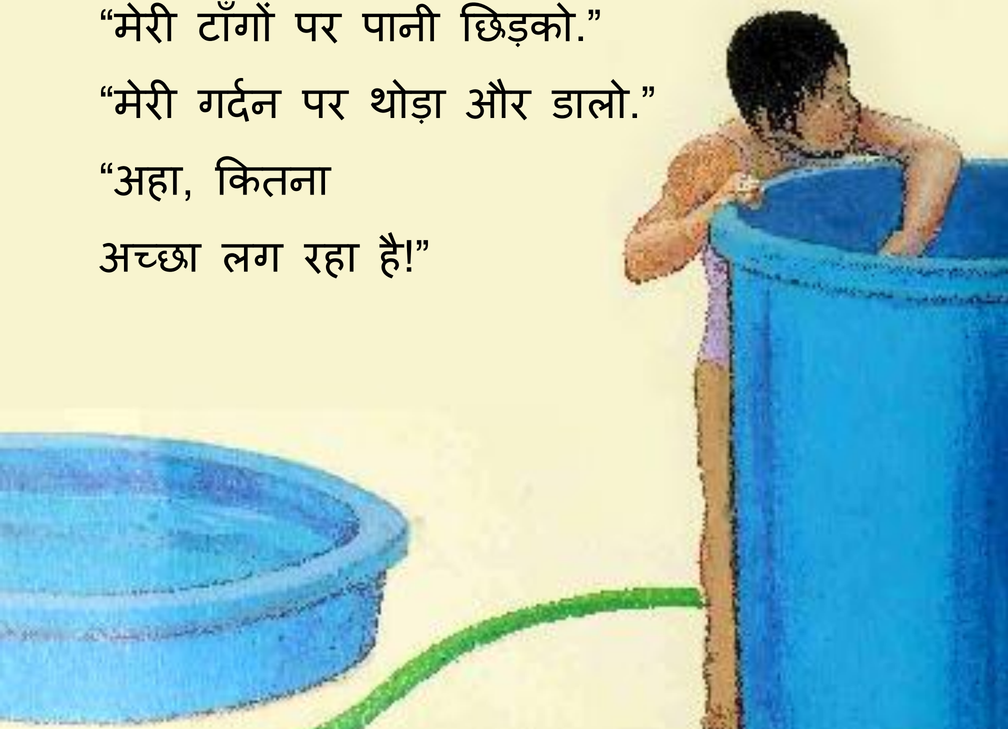
मेढ़ा रुक जाता है.
हार्ली भी रुक जाता है.
वह एक-दूसरे को देखते हैं.
वह ज़मीन पर गिरे अनाज को देखते हैं.
फिर दोनों खाने लगते हैं.



बहुत गर्मी है.
कई दिनों से गर्मी पड़ रही है
इतनी गर्मी हार्ली से सहन नहीं होती.
वह मिट्टी कुरेद कर उसमें लोटता है.
वह अपने दाँत दिखाता है.
वह भिनभिनाता है.
वह भेड़ों को दूर जाने देता है.
वह उनके पीछे नहीं जाता है.

ग्रीष्म ऋतु की गर्मी बढ़ती जाती है.
घास सूख जाती है.
खूब धूल और मक्खियाँ हैं.

गड़ेरिन एक तरणताल ले आती है.
वह पानी के बैरल ले आती है.
फिर वह पाइप से पानी
छिड़कना शुरु करती है.
हार्ली यह देखने के लिए दौड़ता आता है.
गड़ेरिन पाइप को हार्ली की ओर मोड़ती है.
वह निकट आता है.
वह इधर मुड़ता है, उधर मुड़ता है.
वह यह कहता हुआ लगता है,
“मेरी पीठ पर पानी छिड़को.”
“मेरी ठोड़ी पर पानी छिड़को.”
“मेरी टाँगों पर पानी छिड़को.”
“मेरी गर्दन पर थोड़ा और डालो.”
“अहा, कितना
अच्छा लग रहा है!”





अगले दिन गड़ेरिन फिर आती है.
वह बैरल में पानी भरने आती है.
भेड़ों को लाने के लिए वह
कुत्ते भेजती है,
सारी भेड़ें दौड़ती आती हैं.
वह पानी पीने के लिए दौड़ती आती हैं.
हार्ली गड़ेरिन को देखता है.
वह पानी देखता है
लेकिन वह निकट नहीं आता.
क्या हुआ है?

कुछ समय बाद एक और भेड़
पहाड़ी से नीचे आती है.
वह पीछे छूट गई थी.
हार्ली उसकी प्रतीक्षा कर रहा था.
अब वह भाग कर आता है.
वह भेड़ के पीछे भागता है.
वह उसे ज़ोर से आगे धकेलता है.
वह उसे गड़ेरिन की ओर धकेलता है.
अब हार्ली पानी में नहा सकता है.
अब वह अपने को ठंडा कर सकता है.



आज गड़ेरिन ने दो भेड़ें बेची हैं.
दो अजनबी उन दो भेड़ों को अपने
ट्रक पर चढ़ा लेते हैं.
हार्ली निकट ही खड़ा है.
वह रास्ते में खड़ा है.
वह चाहता है कि
उसकी भेड़ें न जायें.
ट्रक चला जाता है.
जितनी दूर तक हार्ली
पीछा कर सकता है
वह पीछा करता है.
वह बाड़ के कोने तक जाता है.
जब तक ट्रक आँख से
ओझल नहीं हो जाता
तब तक वह से देखता रहता है.
वह जानता है कि वह भेड़ें वापस
नहीं आयेंगी.
हार्ली मैदान के बीच तक भागता है.

वह ज़मीन पर लेट जाता है.
वह ज़मीन पर लोटने लगता है.
उसकी टाँगें हवा में हिल रही हैं.
वह भिनभिनाता है और अपने दाँत
दिखाता है.
हार्ली झुंझलाया हुआ है.



कुछ देर बाद वह शांत हो जाता है.
वह उठ कर झुंड के पास आ जाता है.
वह भेड़ों के बीच लेट जाता है.





गड़ेरिन एक नया मेढ़ा खरीदने
का सोच रही है.
कोई उसका मेढ़ा खरीदना चाहता है.
गाँव के मेले की ओर जाते हुए
वह इसके बारे में सोचती है.
आज भेड़ों की प्रतियोगिता है.
गड़ेरिन उत्साहित है.
वह पहले ऊन के कोठार में जाती है.

वह देखती है कि हार्ली की ऊन ने
नीला रिबन जीता है.
यह पुरस्कार है **उत्कृष्ट,**
विरले और अनोखे पशु के लिए.
जो लोग ऊन कात कर धागा बनाते हैं
वह हार्ली की ऊन खरीदना चाहते
हैं.गड़ेरिन को हार्ली और उसके
पुरस्कार पर गर्व है.

अब वह भेड़ों की ऊन की ओर देखती है.

पहला पुरस्कार किस को मिला है?

विजेता मेढ़ा है.

उसे भी नीला रिबन मिला है.

वह मेढ़े के विषय में सोचने लगती है.

उसकी ऊन पुरस्कार पाने योग्य है.

वह ताकतवर है.

उसके मेमने ताकतवर मेमने है.

वह और हार्ली मित्र हैं.

हार्ली के आने के बाद से उसका व्यवहार

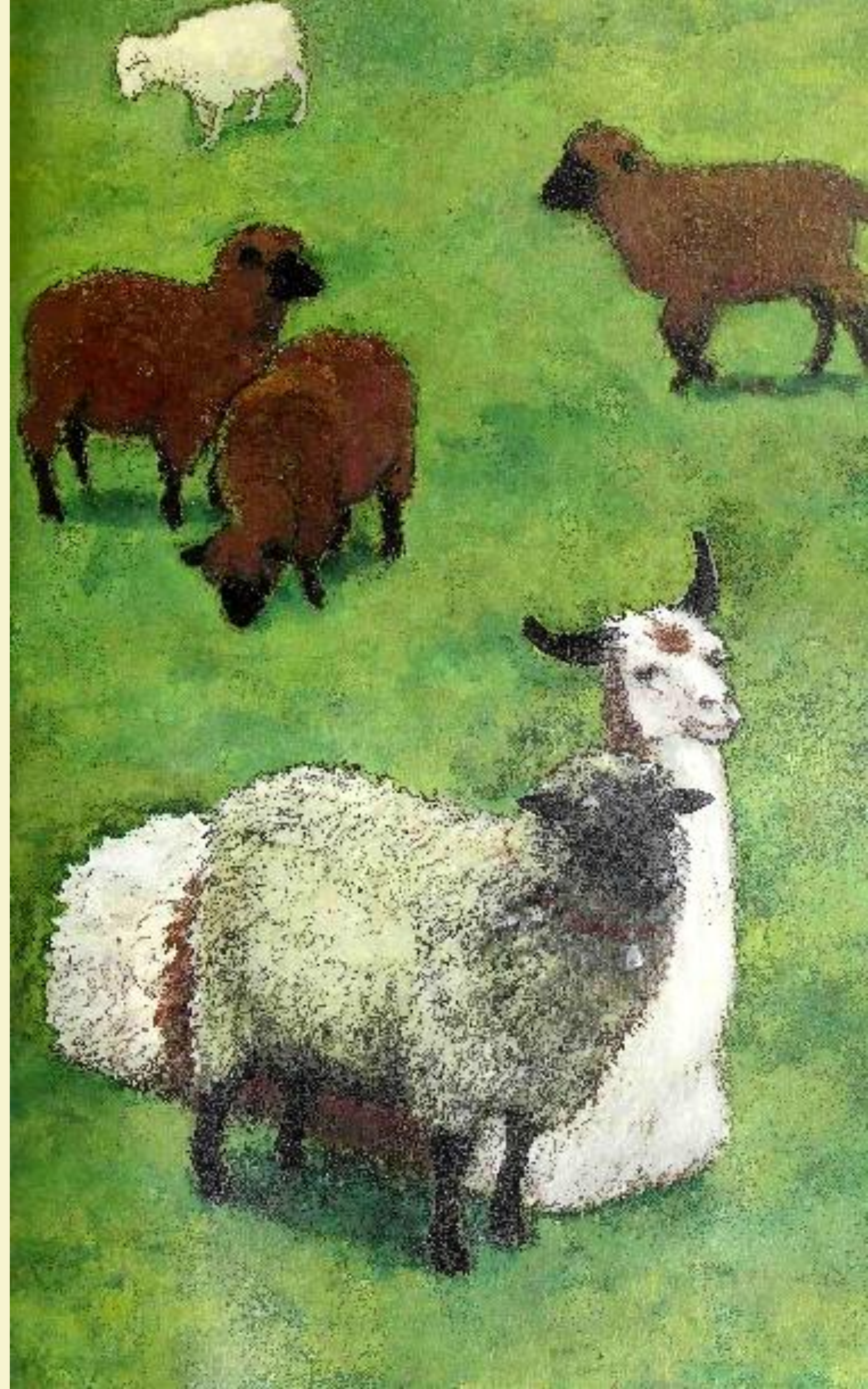
उतना बुरा नहीं रहा है.

गड़ेरिन को लगता है कि उसके पास

पहले ही एक अच्छा मेढ़ा है.

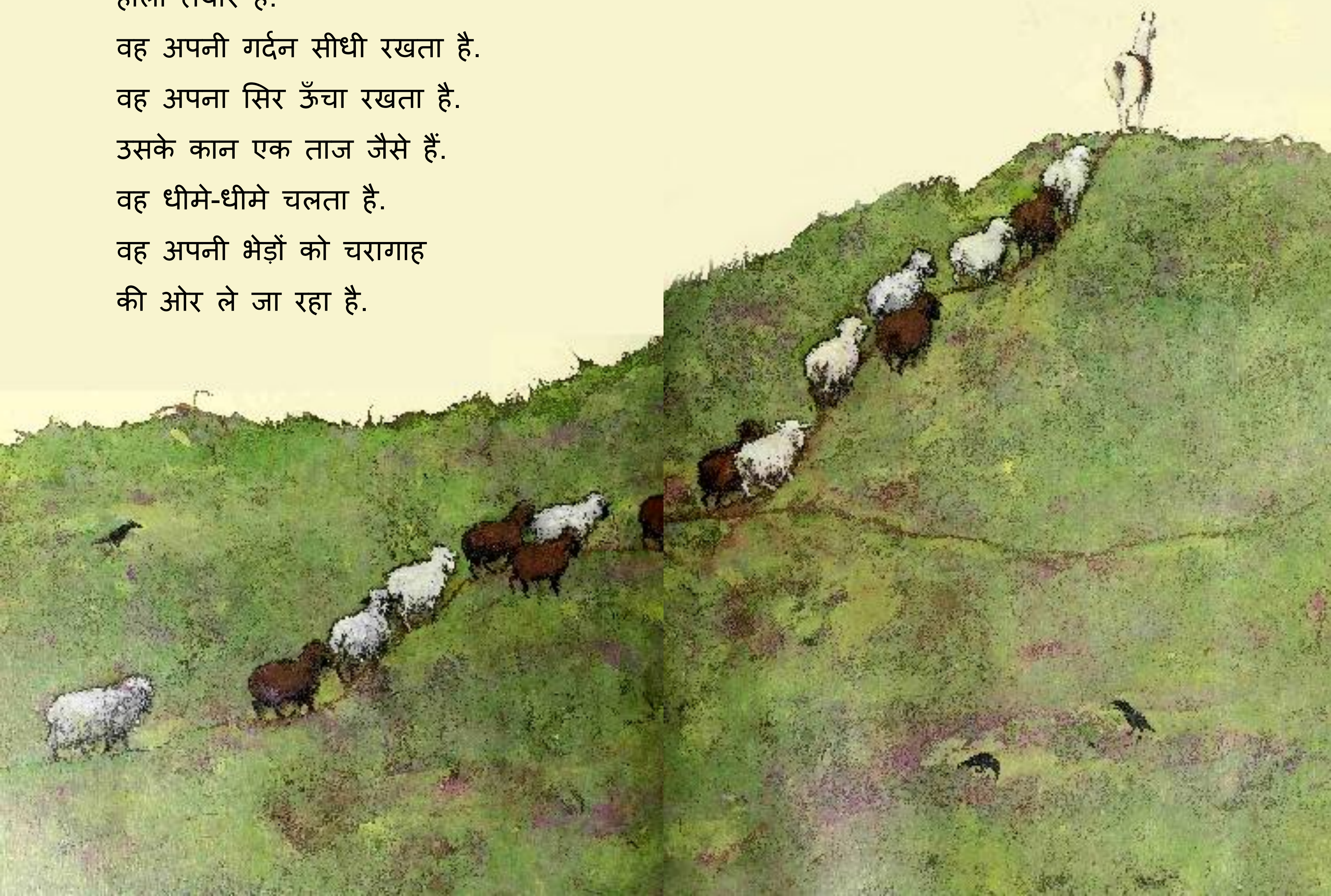
वह सोचती है कि वह एक वर्ष और

उसे अपने पास रखेगी.



सुबह हो गई है.
बाड़े का दरवाज़ा खुला है.
हार्ली तैयार है.
वह अपनी गर्दन सीधी रखता है.
वह अपना सिर ऊँचा रखता है.
उसके कान एक ताज जैसे हैं.
वह धीमे-धीमे चलता है.
वह अपनी भेड़ों को चरागाह
की ओर ले जा रहा है.

एक लंबी कतार में भेड़ें उसके पीछे चलती हैं.





दुपहर के समय सूरज बहुत गर्म है.

मैदान के बीच से जाता रास्ता खाली है.

भेड़ें यहाँ-वहाँ बिखरी हुई हैं.

कुछ सो रही हैं.

कुछ घास चर रही हैं.

मेढ़ा जब घास खाता है तो घंटी बजती है.

एक कौवा काँव-काँव करता है.

पहाड़ी पर बैठा हार्ली आराम कर रहा है.

समाप्त